ACHIEVEMENTS OF CHARLEMAGNE-2

FOR:U.G.PART-1,PAPER-2
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

प्रशासन

- शार्लमा केवल सफल विजेता ही नहीं अपितु एक कुशल प्रशासक भी था। आर्थिक संपन्नता का अभाव तथा शासन के प्रति निष्ठावान पदाधिकारियों की कमी मुख्य बाधाएं थी।शार्लमा ने बड़ी कुशलता के साथ प्रशासन का संगठन किया। शार्लमा की शासन व्यवस्था में ***रोम*** तथा ***जर्मनी*** के शासन तत्व का समावेश था। पुरानी शासन पद्धति की मर्यादा कायम रखते हुए शार्लमा ने नए ढंग से कैरोलिंगियन प्रशासन का संगठन किया और उसे पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत बनाया। इसमें ***केंद्रीय करण*** के तत्व मौजूद थे।

प्रशासनिक इकाइयां

- शार्लमा ने अपने साम्राज्य को प्रशासनिक इकाइयों में बांट दिया ।पहला विभाजन ***जिलों*** में किया गया जिसे ***काउंटी (County)*** कहा गया। काउंटी का शासक ***काउंट (Count)*** कहलाया और प्रत्येक काउंटी में उसकी नियुक्ति की गई ।सीमांत जिलों को भी प्रशासनिक संगठन में शामिल किया गया ।इन जिलों का शासन भार सीमा काउंटों पर छोड़ दिया गया। काउंट सम्राट के प्रति उत्तरदाई होते और उनकी ही कृपा पर उनकी नियुक्ति ,पदोन्नति और पदच्युती निर्भर थी। वे आजीवन इस पद पर नियुक्त किए जाते।

रियासतों का खात्मा

- शार्लमा ने कुछ ड्यूक रियासतों को समाप्त कर दिया। ***बेनेवेन्तो, ब्रिटोनी तथा गास्कॉनी*** को छोड़कर सारी रियासतें समाप्त कर दी गई क्योंकि वह काफी शक्तिशाली थे और शासन की शांति तथा व्यवस्था कभी भी भंग कर सकते थे। ड्यूकों के अधिकारों में कटौती की गई ।प्रशासन के प्रत्येक बिंदु पर सम्राट का परामर्श तथा आदेश लेना आवश्यक कर दिया गया।

डाइट का गठन

- सामाज्य तथा प्रशासन के शीर्ष बिंदु पर सम्राट होने के बावजूद उसने अपने सहायक के रूप में एक साधारण सभा का संगठन किया जिसे ***डाइट*** कहा गया ।डाइट की बैठक प्रत्येक वर्ष बसंत ऋतु में होने का निर्धारण किया गया। इसमें पूरोहितों तथा सरदारों की संख्या अधिक थी तथा इसका **अध्यक्ष** सम्राट का निकटतम व्यक्ति होता था ।अध्यक्ष का प्रधान काम सम्राट को प्रशासन की समस्याओं और आवश्यकताओं के संबंध में सूचना देना तथा सम्राट द्वारा पूछे जाने पर प्रशासनिक परामर्श देना था। **डाइट विधायिका नहीं बल्कि परामर्श दात्री समिति थी।**

मिसी डोमिनिकी की नियुक्ति

- शार्लमा ने केंद्र तथा काउंटी के मध्य संपर्क बनाए रखने तथा काउंटो की शक्ति को सीमित करने के लिए एक उच्च पदाधिकारी की नियुक्ति की जिसे ***मिसी डोमिनिकी(Missi Dominici)*** कहलाया। एक साथ दो निरीक्षक रखने की व्यवस्था थी जिसमें एक ***धर्माधिकारी*** तथा दूसरा ***साधारण व्यक्ति*** होता। दो को एक साथ रखने के पीछे षड्यंत्रों को रोकने की भावना थी ।

मिसी डोमिनिकी के कार्य

- मिसी डोमिनिकी प्रशासन के नए अधिकारी थे और राज्य के ***कमिश्नर*** थे ।संपूर्ण साम्राज्य ***21 मंडलों*** में विभक्त था तथा वे मंडलों का निरंतर दौरा करते थे। इनका निम्नलिखित कार्य था-

1. काउंटियों में कानून के सही ढंग से अनुपालन की सूचना सम्राट को देना
2. अन्याय के विरुद्ध आवेदन पत्र देने वालों के मामले की सुनवाई करना
3. चर्च का सम्मान करना जनता को इसके लिए प्रेरित करना

मिसी डोमिनिकी के कार्य

4. दरिद्र ,गरीबों, अपाहिजो, विधवाओं आदि की सेवा एवं सहायता करना

5. घूस, खुशामद से दूर रहना तथा अन्य पदाधिकारियों को भी से दूर रखना। जनता के प्रति निष्पक्ष तथा न्याय पूर्ण नीति अपनाना

6. प्रभावशाली मित्रों तथा व्यक्तियों से सचेत रहना।

कैपीचुलरी

- शार्लमा ने राज्य में कई नियम लागू किए ।यह नियम के कैपीचुलरी कहे जाते हैं ।उसकी **65 कैपचुलरी** मध्यकालीन यूरोप की विधियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। ये लिखीत व्यवहार संहिता के रूप में नहीं है परंतु व्यापक अवश्य है ।इनमें नैतिक, राजनीतिक ,नागरिक, धार्मिक, सैनिक एवं अन्य विषयों पर कानून शामिल है।
- इन कैपचुलरी के बल पर शार्लमा ने राज्य की आर्थिक दशा में सुधार लाएँ ।उसने दंड की कठोरता तथा नैतिकता के आदर्श की घोषणा करके राज्य को शांति तथा व्यवस्था दी। व्यवस्थित वातावरण में वाणिज्य व्यापार तथा कृषि काफी उन्नत हुआ।

न्याय प्रशासन

- काउण्टियों में एक वर्ष में तीन बार फौजदारी अदालतों की बैठक होती थी जो महत्वपूर्ण फौजदारी मामलों की सुनवाई करती थी। छोटी-छोटी अदालतों का भी संगठन किया गया था जिसमें साधारण मुकदमे पेश किए जाते थे। पुनः सात न्यायाधीशों की एक अलग अलग अदालत की रचना की गई जो स्थानीय समस्याओं का निबटारा करती थी। न्यायाधीश जीवन भर अपने पद पर बने रहते थे।

सैन्य संगठन

- राज्य के विस्तार तथा सुरक्षा एवं शांति हेतु शार्लमा ने सेना का संगठन किया। उसने योग्यता संपन्न व्यक्तियों को सेना में नियुक्त किया। राज्य के खास-खास भूभागों से व्यक्तियों को चुनकर सेना में दाखिल किया जाता था।प्रायः ऐसे व्यक्ति को ही सेना में सेवा करने का अवसर दिया जाता था जिनके पास संपत्ति थी।भूमि जोतने वाले कृषक भी सैनिक बन सकते थे। संपत्ति के आधार पर सैनिकों की नियुक्ति की प्रथा ने कालांतर में यूरोप में सामंतवाद को जन्म दिया ।

राजस्व प्रशासन

- शासन का मुख्य ध्येय राज्य को अधिक से अधिक आर्थिक दृष्टिकोण से संपन्न बनाना था इसलिए अधिकाधिक आय अर्जन पर जोर दिया गया।सेवा कर,प्रत्यक्ष कर ,जब्त धन भेंट ,भूमि कर ,धनी व्यक्तियों पर कर लगाए गए। खनिज पदार्थों ,जंगलों, परती भूखंडों, बंदरगाहों ,सड़कों आदि को राजकीय संपत्ति बनाई गई और वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण राज्य करने लगा।राइन तथा डेन्यूब को नहरों द्वारा जोड़ दिया गया। भूमि व्यवस्था के लिए शार्लमा ने पृथक नियमों का निर्माण किया ।

शार्लमा के प्रशासन का स्वरूप

- **धर्म-तंत्रीय प्रशासन-** ***थॉमसन- जॉनसन*** ने शार्लमा के प्रशासन को धर्म-तंत्रीय प्रशासन की संज्ञा दी है-

1. शार्लमा यह मानता था कि उसका साम्राज्य देवी अधिकारों से संबंधित है तथा ईश्वर के प्रत्यक्ष प्रभाव से संचालित होता है
2. उसने चर्च के प्रति सहानुभूति दिखलाई
3. उसने मूर्ति पूजा का विरोध किया तथा ईसाइयत को बढ़ावा दिया।
4. उसका राज्य अभिषेक पोप द्वारा किया गया था।

मिलाजुला प्रभाव

- शार्लमा का शासन रोमन ,जर्मन और ईश्वर के प्रभाव से मुक्त नहीं था। रोमन प्रभाव इसलिए दिखता है क्योंकि उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता था ।शासन के पदों पर अधिकांश जर्मन नियुक्त थे तथा ईश्वर की कृपा तथा इच्छा से ही शार्लमा का राज्याभिषेक हुआ था।

निरंकुश शासन

- ईश्वर के नाम पर चर्च की सहायता से शार्लमा ने निरंकुश व्यक्तिगत शासन कायम किया
- डाइट केवल परामर्श देने वाले समिति थी और यह आवश्यक नहीं था कि शार्लमा उनके परामर्श को स्वीकार करे
- कर्मचारियों तथा न्यायाधीशों की नियुक्ति वह स्वयं करता
- पोप का स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया और वह शार्लमा का सहायक और राज्य का अंग बनकर साम्राज्य के प्रशासनिक कार्य में भाग लेता था।
- मिसी डोमिनिकी उसके विश्वासपात्र पदाधिकारी थे जिसके कारण शार्लमा को निरंकुश शासन में सहायता मिली।

चर्च नीति

- शार्लमा ने विभिन्न तरीकों को अपनाकर चर्च पर अपना नियंत्रण तथा प्रभाव कायम किया ।उसने चर्च के प्रशासन के लिए विशपों को मनोनीत किया। चर्च की संपत्ति पर राजकीय नियंत्रण कायम किया। पादरियों की सभा की बैठक को आमंत्रित करने लगा ।धर्म सभा की अध्यक्षता करने लगा और चर्च के प्रशासनिक नियमों का निर्माण करने लगा।उसनें चर्च को नियमित टैक्स देने के लिए विधियों का निर्माण किया और चर्च की भूमि को कर मुक्त कर दिया।

शिक्षा नीति

शार्लमा ने राज्य में ***सह–शिक्षा*** की व्यवस्था की। उसने ***प्रासाद पाठशाला (Place school)***की व्यवस्था की जिस का निरीक्षण वह स्वयं करता था ।मेधावी तथा प्रतिभाशाली छात्रों को वह राजकीय पुरस्कार देना प्रारंभ किया ।राजपुत्रों की शिक्षा के लिए ***क्लेमेंट(Clement)*** नामक पदाधिकारी की नियुक्ति की गई। ***चमड़े की पट्टियों*** पर पुस्तकें लिखी जाने लगी। पुरोहितों के लिए शिक्षा ग्रहण करना तथा पड़ोसी के शिशुओं को पढ़ाना अनिवार्य कर दिया। शैक्षणिक श्रेष्ठता के लिए शार्लमा ने विदेशी विद्वानों तथा शिक्षकों को राज्य में आमंत्रित किया ।

शिक्षा नीति

- शार्लमा ने मठों को विधा तथा शिक्षा के केंद्र बनाने का प्रयास किया। इस काल की सारी लैटिन कविताएं तथा गध मठों के कारण ही उपलब्ध है।
- शार्लमा ने ***787 ई.***में पत्र लेखन तथा अध्ययन कला की जानकारी के लिए ***निदेशिका(Capitulate de litters Colendis)*** तैयार की।
- ***थियोडल्फ*** की कविताएं काफी लोकप्रिय हुई तथा ***इनहार्ड*** ने शार्लमा की जीवनी लिखी।

निर्माता एवं कला प्रेमी

- आस्ट्रेसिया के ***इंगेहम*** तथा ***निजमेगेन*** नामक नगरों में सम्राट के लिए राजभवन बनाए गए।
- राजधानी में रेवेना के सान विताले गिरजाघर के आदर्श पर ***राज भवन*** का निर्माण किया गया है जिसके निर्माण में सीरिया और बिजेन्ताइन शैलियों का प्रयोग किया गया।
- अभियंताओ ने ***मैंज*** मे एक पुल का निर्माण किया जो 1000 हाथ लंबा था।
- शार्लमा ने एक ***नहर*** का निर्माण करवाया था जिसके चलते राइन तथा डेन्यूब नदियां एक दूसरे के साथ मिल गई।

मूल्यांकन

कुल मिलाकर शार्लमा ने एक कल्याणकारी शासक की भूमिका निभाई ।उसका शासन जनता के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ ।उसने साम्राज्य में राजनीतिक तथा धार्मिक एकता लाई ।लड़ाकू विद्रोहियों को अपने साम्राज्य से निकाल बाहर किया ।प्रशासन के संचालन के लिए समुचित व्यवस्था की। न्याय विभाग तथा कानून का संगठन और निर्माण किया ।राजस्व विभाग के सारे दुर्गुणों को समाप्त किया तथा आर्थिक संपन्नता के लिए विभिन्न कार्यों का संपादन किया। उसने राज्य के विभिन्न तथा बेमेल तत्व को मिलाकर एक कर दिया जिसके फलस्वरूप राज्य में एकता आई।